टेंडर हार्ट हाई स्कूल, सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य पाठ- 6 'जैसलमेर की राजकुमारी (कहानी)
लेखक- आचार्य चतुरसेन भाग 1
पुस्तक - नवतरंग भाग - 8

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा आठवीं की हिंदी साहित्य की पाठ्य पुस्तक नवतरंग - 8 की पृष्ठ संख्या 44 पर दिए पाठ- 6 'जैसलमेर की राजकुमारी' का अध्ययन करेंगे। यह कार्य आपको 8.7.24 को भेजा जाएगा।

सब बच्चे अपनी पुस्तक में पाठ-6 खोलें तथा अभ्यास- पुस्तिका भी निकालकर रख लें और अब पाठ को पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के बीच में से मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। उन पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आप तीन मिनट का विराम लेंगे। इसलिए पाठ को ध्यान से सुनना अति आवश्यक है।

सर्वप्रथम हम पाठ के विषय में जान लेते हैं। आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा रचित 'जैसलमेर की राजकुमारी' कहानी एक ऐतिहासिक कहानी है। इसमें उन्होंने जैसलमेर की राजकुमारी रत्नवती की वीरता का वर्णन किया है। वह अपने पिता को दुर्ग से बाहर शत्रु का सामना करने के लिए भेजती है। वह स्वयं अपनी सखियों और अन्य सैनिकों के साथ दुर्ग में रहकर दिन-रात शत्रुओं का सामना कर दुश्मन की कपट चाल को विफल कर देती है। वह यवन-सेना के अधिपति को बंदी बना लेती है और अपनी कूटनीति से मलिक काफूर से खाद्य सामग्री भी मँगवाती है। इस प्रकार उसके अपने अदम्य साहस और बुद्धिमानी से लंबे समय तक आक्रमण करने पर भी शत्रु-सेना किले में नहीं घुसने पाती। शत्रु को मुँह की खानी पड़ती है। अंत में जैसलमेर को विजय प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

8.7.24

PAGE 2

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 6 जैसलमेर की राजकुमारी)

पाठ का सारांश :- भारत के बहादुर लोगों की वीरता से सारी दुनिया परिचित है। भारत के लोग बहादुर तो होते ही हैं, न्याय और नीति का पालन करने वाले भी होते हैं। दुनिया भारत से सीखती है कि मित्र हो या शत्रु, शरण में आए व्यक्ति की रक्षा और उसकी देखभाल कैसे की जाती है? आइए पढ़ते हैं कि राजस्थान के जैसलमेर नामक राज्य की राजकुमारी रत्नवती ने क्या किया -

जैसलमेर राजस्थान प्रदेश का एक शहर है। वहाँ के राजा रत्नसिंह थे और उनकी बहादुर कन्या का नाम रत्नवती था। उसने हँसकर गर्व से अपने पिता से कहा, "पिताजी, दुर्ग की चिंता आप न कीजिए। मैं उसकी रक्षा करूँगी। चाहे अलाउद्दीन कितनी ही वीरता से हमारे दुर्ग पर आक्रमण करे, आप निर्भय होकर शत्रु से लोहा लें" वह मर्दानी पोशाक पहने बलिष्ठ घोड़े पर चढ़ी हुई थी। कमर में दो तलवारें लटक रहीं थीं। पीठ पर तरकस और हाथ में धनुष था। वह चपल घोड़े की (रास) लगाम को बलपूर्वक खींच रही थी जो एक क्षण भी स्थिर रहना नहीं चाहता था।

रत्नसिंह एक हाथी के फौलादी हौदे पर बैठे आक्रमण के लिए प्रस्थान कर रहे थे। सामने राजपूत सवार नंगी तलवारें लिए मैदान में खड़े थे। उनके घोड़े हिनहिना रहे थे और शस्त्र भी युद्ध के लिए झनझना रहे थे।

राजा रत्नसिंह ने अपनी पुत्री के कंधे पर हाथ धरके उसे सावधान रहने के लिए कहा क्योंकि वे दुर्ग की जिम्मेदारी रत्नवती को सौंपकर, निश्चिंत होकर शत्रु पर विजय प्राप्त करने जा रहे थे। उन्होंने रत्नवती को समझाया कि शत्रु वीर ही नहीं, बल्कि धूर्त और छलिया भी है। बालिका ने वक्रदृष्टि से पिता की ओर देखा और हँसकर कहा - "नहीं, पिताजी! आप निश्चिंत होकर प्रस्थान करें, किले का बाल भी बाँका न होगा।"

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

8.7.24

PAGE NO. 3

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

राजा रत्नसिंह ने अपनी तीव्र दृष्टि धूप से चमकते हुए कँगूरों पर डाली और हाथी को आगे बढ़ाया। उनके जाते ही दुर्ग का फाटक बंद हो गया। शत्रु ने दुर्ग को टिड्डी दल की भाँति घेरा हुआ था। सब प्रकार की रसद बाहर से आनी बंद थी। प्रतिदिन यवनदल गोली और तीरों की वर्षा करते थे, पर जैसलमेर का अजेय दुर्ग गर्व से मस्तक उठाए खड़ा था। शत्रु समझ गए थे कि दुर्ग विजय करना हँसी ठट्ठा नहीं है। राजनंदिनी रत्नवती अपने दुर्ग में सुरक्षित बैठी शत्रुओं के दाँत खट्टे कर रही थी। वह अपनी सखियों सहित दुर्ग के किसी बुर्ज पर जाती और वहाँ से सनसनाते तीरों से वर्षा करती। वह कहती, "मैं स्त्री हूँ, पर अबला नहीं। मुझमें साहस है और हिम्मत भी। मैं इन यवनों को कुछ नहीं समझती।" यह सुनकर उसकी सहेलियाँ ठठाकर हँस देती थीं।

बच्चो! अब मैं आपसे प्रश्न पूछूँगी जिनके उत्तर लिखने के लिए आप तीन मिनट का समय लेंगे।

प्रश्न 1. जैसलमेर के दुर्ग पर किसकी सेना ने आक्रमण किया था?
प्रश्न 2. राजा रत्नसिंह ने अपनी पुत्री को क्या समझाया?
प्रश्न 3. शत्रु सेना ने दुर्ग को किस प्रकार घेर रखा था? उसका दुर्ग पर क्या असर पड़ा?

बच्चो! अन्तराल का समय अब समाप्त हुआ। आशा है आपने इन प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं:-

उत्तर 1. जैसलमेर के दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी की यवन सेना ने आक्रमण किया था।
उत्तर 2. राजा रत्नसिंह ने अपनी पुत्री को समझाया कि दुश्मन केवल वीर ही नहीं, धूर्त और छलिया भी है इसलिए उनसे सावधान रहना।

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 8.7.24
PAGE No. 4

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

उत्तर-3. शत्रु ने दुर्ग को टिड्डी दल की भाँति घेर रखा था। इससे दुर्ग के अंदर सब प्रकार की रसद, बाहर से आनी बंद हो गई।

बच्चो! अब पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ना आरंभ करते हैं। आपका ध्यान अपनी पुस्तक पर ही केंद्रित होना चाहिए।

शत्रु अलाउद्दीन खिलजी की सेना का नेतृत्व करने वाला मलिक काफूर एक गुलाम था। उसने सोचा था कि जब किले में खाद्य-पदार्थ कम हो जाएंगे तो दुर्ग स्वयं ही वश में आ जाएगा। फिर भी वह समय-समय पर दुर्ग पर आक्रमण कर देता था परन्तु दुर्ग की चट्टानों तथा भारी दीवारों को कोई हानि नहीं पहुँचती थी। राजकुमारी बहुधा बुर्ज पर से कहती, "ये धूर्त गर्द उड़ाकर और गोली बरसाकर मेरे किले को गंदा कर रहे हैं। ऐसा करके इन्हें क्या लाभ होगा!"

यवन दल ने एक बार दुर्ग पर प्रबल आक्रमण किया। राजकुमारी चुपचाप बैठी रही। जब शत्रु आधी दूर तक दीवार पर चढ़ आए तब भारी पत्थरों और गर्म तेल की वह मार पड़ी कि शत्रु-सेना छिन्न-भिन्न हो गई। लोगों के मुँह झुलस गए। हजारों तौबा-तौबा करके प्राण लेकर भागे।

सूर्य छिप रहा था। राजकुमारी कुछ चिंतित भाव से डूबते हुए सूर्य को देख रही थी। उसे चार दिन से पिता का संदेश नहीं मिला था। वह एक बुर्ज के नीचे बैठ गई और सोचने लगी कि इस समय पिता की सहायता कैसे की जा सकती है! धीरे-धीरे अंधकार बढ़ने लगा। उसने देखा, एक काली मूर्ति धीरे-धीरे पर्वत की तंग राह से किले की ओर अग्रसर हो रही है। राजकुमारी ने समझा कि वह उसके पिता द्वारा भेजा गया कोई

(पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

संदेशवाहक होगा, वह चुपचाप उत्सुक होकर उधर ही देखती रही। उसे आश्चर्य तब हुआ जब उसने देखा कि जिसे वह अपने पिता का संदेशवाहक समझ रही थी, वह गुप्त द्वार की ओर न जाकर सिंह-द्वार की ओर जा रहा था। तब उसे विश्वास हो गया कि वह अवश्य ही शत्रु है। राजकुमारी ने तुरंत एक तीखा बाण हाथ में ले लिया और क्षिपती हुई उस मूर्ति के साथ ही द्वार के ऊपर आ गई। उसने देखा कि वह मूर्ति एक गठड़ी को पीठ से उतारकर प्राचीर पर चढ़ने का उपाय सोच रही थी। तभी राजकुमारी ने धनुष पर बाण चढ़ाकर शत्रु को ललकारा और उसे वहीं रुकने के लिए कहा। सामने राजकुमारी को देख वह व्यक्ति भयभीत स्वर में बोला- "मुझे किले के भीतर आने दीजिए, बहुत ज़रूरी संदेश है।"
"वह संदेश वहीं से कह।" राजकुमारी ने कहा।
"वह अतिशय गोपनीय है।" शत्रु ने कहा।
"कुछ चिंता नहीं, कह।" राजकुमारी ने कहा।
"किले में आकर कहूँगा।" शत्रु ने कहा। बच्चो! इस पाठ का शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे।

बच्चो! अब हम उपरिलिखित गद्य खण्ड में आए कुछ कठिन शब्दों के अर्थ जान लेते हैं:-

शब्द - अर्थ

1. गर्व - अभिमान
2. दुर्ग - किला
3. निर्भय - बिना डरे
4. दुर्गाधिपति - दुर्ग के अधिपति (राजा)
5. बलिष्ठ - शक्तिशाली
6. तरकस - तूणीर
7. चपल - चंचल
8. रास - लगाम
9. क्षण - पल
10. स्थिर - रुके रहना
11. फौलादी - लोहा, मज़बूत
12. हौदे - हौज़
13. प्रस्थान - जाना
14. निश्चिंत - बिना चिंता के

(पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DA 8.7.24
PAGE No. 6

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

शब्द - अर्थ

(15) धूर्त- दुष्ट, कपटी (16) छलिया - धोखेबाज़ (17) वक्र दृष्टि- तिरछी नज़र (18) बाल भी बाँका न होना - कोई नुकसान न होना (19) तीव्र दृष्टि-पैनी नज़र (20) कँगूरों - गुंबद (21) भाँति- तरह (22) शत्रु-दुश्मन (23) रसद - खाद्य सामग्री (24) यवनदल - आक्रांता, शत्रुदल (25) अजेय- जिसे जीता न जा सके (26) मस्तक - माथा (27) हँसी ठट्ठा - मज़ाक, खेल, आसान (28) राजनंदिनी- राजा की पुत्री (29) दाँत खट्टे करना - हरा देना (30) बुर्ज- चोटी (31) अधिपति - शासक, प्रमुख, राजा (32) खाद्य - पदार्थ - खाने की वस्तुएँ (33) क्षति- हानि (34) बहुधा - अक्सर, प्राय: (35) गर्द - धूल (36) प्रबल- तेज़, बलशाली (37) छिन्न - भिन्न - बिखरना, बँटना (38) झुलसना - जलना (39) उत्सुक - अधीर, इच्छुक (40) प्राचीर - दीवार (41) सम्मुख - सामने (42) भयभीत - डरा हुआ (43) स्वर - आवाज़ (44) अतिशय - बेहद, अत्यधिक (45) गोपनीय - गुप्त, छिपाने योग्य।

गृहकार्य:- सभी बच्चे पाठ-6 को उच्च स्वर में पढ़ेंगे। पाठ पढ़ने से स्वयं प्रश्नों के उत्तर समझ में आ जाएँगे। अत: स्वाध्याय अति आवश्यक है। कठिन शब्दों के अर्थ सामने रखेंगे। प्रतिदिन शब्दकोश से 10 शब्दों के अर्थ अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे। इससे ज्ञान में वृद्धि होगी।

पाठ का शेष भाग अगले हफ्ते पढ़ेंगे---

(अंतिम पृष्ठ-6)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner